सत्य एँव अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन इवैंजलिकल फैलोशिप। (LEF,Chennai)

जनवरी- फरवरी, 2004

नये साल का उदय

भजन लेखिका फ्रांसिस रिड़ले हेवरगल नए साल के पहले दिन को बड़ी गंभीरता के साथ लेती थीं। उस दिन वह बीते साल पर ध्यान करतीं और अधिकतर नए साल और नए दिन के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त करती कविता लिख कर अपने मित्रों को भेजती थीं। १८७४ में लिखी उनकी कविता अमर हो गई। वह उस समय ३६ साल की थीं। उन्होंने यह कविता नए साल की मुबारकबाद वाले पत्र पर छपवाई और अपने मित्रों को भेज दीं। उस पत्र का शीर्षक था 'एक सुखद नया साल ! सदा ऐसा हो !' पत्र के भीतर लिखा था।

नये साल का आगमन है !
प्रिय पिता ऐसा हो,
काम में या आराम में,
फिर यह साल बीते तेरे साथ।
प्रगति का और एक साल,
स्तुति का और एक साल,
परख का और एक साल.
हो संगति तेरी दिनों-दिन भर साल।

मृत्युंजय ख्रिस्त
ON LINE

By Email:
post@lefi.org

At our Web Site:
http://lefi.org

वह बढ़ता गया और आत्मा में बलवन्त होता गया

लूका (१:८०) 'और वह बालक बढ़ता और आत्मा में बलवन्त होता गया। और इस्राएल पर प्रगट होने के दिन तक जंगलों मे रहा।'

जब हम किसी के बारे मे सुनते है कि वह बढ़ रहा है, तो हम यह जानना चाहते हैं कि वह व्यक्ति कितना लम्बा, डील डौल में कितना चौड़ा हो गया है। परन्तु यहाँ बाइबल आत्मा में बलवन्त होने की बात कर रही है। मैं बड़े ध्यान से देख रहा हूँ कि जब लोगों के बटुए मोटे हो जाते हैं, उनकी आत्मा निर्बल होने लगती है। विश्वास का पिता अब्राहम ऐसा नही था। परमेश्वर ने उसे भौतिक वस्तुओं में आशिष दी, लेकिन इसका यह अर्थ नही था कि उसने अपने आध्यत्मिक जीवन की उपेक्षा की।

ऐसी स्थिति मे मैं यहाँ अपने लिए बहुत बड़ा खतरा भापँता हूँ। जब एक व्यक्ति मन फिराता है तो कहता है, 'मै ने कितना पैसा धुम्रपान मे, शराब पीने और दूसरी बातों मे बरबाद किया है। अब परमेश्वर ने मुझे नया मन दिया है, मैं अपने पैसे को सावधानी से खर्च करूँगा।' वह न केवल पैसे बल्कि अपने समय का भी ध्यान रखता है। वह अपनी कमाई का दसवाँ भाग परमेश्वर को भेंट चढ़ाता है। इससे उसे और आशिष मिलती है। यह आशीष इतनी होगी कि इसको संभालने की जगह भी नही मिलेगी। परमेश्वर द्वारा पाई आशिष को संभालने के लिए गहरे प्रशिक्षण की आवश्यकता है। हम परमेश्वर के ऋणी हैं, हमें यह कहना चाहिए, परमेश्वर ने मुझे इतना अधिक दिया है इसलिए मैं और आधिक उसका ऋणी हूँ।

युहन्ना बपतिस्मा देने वाले के विषय में, सांसारिक आशिषों के विषय मे कुछ नहीं लिखा है। सांसारिक तौर पर वह एक गरीब व्यक्ति था। उसका खानपान एँव पहनावा साधारण था। अपनी जवानी के सारे वर्ष, लगभग तीस साल की आयु तक वह रेगिस्तान मे रहा। सांसारिक तौर पर उसे कोई सुख-सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थीं, लेकिन बाइबल कहती है कि वह 'आत्मा मे बलवन्त होता गया' कभी-कभी अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर हम नहीं पाते। हम अचंभा करते हैं, 'मेरी प्रार्थना कहाँ जा रही है?' जब तम्हारी प्रार्थना छत तक ही पहुँची लगती हो, तुम्हे कहना चाहिए 'परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है, 'मुझे पुकारो और मैं तुम्हे जवाब दूँगा और तुम्हें वह महान बातें दिखाऊँगा जो तुम जानते तक नहीं।' मैं अपनी भावनाओं के अनुसार नही चलूँगा और न ही जल्द अपनी प्रार्थना का उत्तर पाने के अनुसार। मैं परमेश्वर के दिये वरदानों के अनुसार चलूँगा।' लेकिन इसके लिए महान आत्मिक शक्ति चाहिए। नहीं तो हम निराश और हताश होने लगते है।

जब युहन्ना बपतिस्मा देने वाला आत्मा मैं शक्तिशाली बना, उसे सांसारिक सुख-सुविधाओं की परवाह नहीं की। उसने यह नहीं कहा कि मुझे शहर मैं रहना चाहिए। 'उसने यह कह कर शिकायत नही कि, 'मेरे पास यह नही, मेरे पास वह चीज़ नहीं है,' नहीं, उसके पास सभी वर्ग के लोगों के लिए संदेश था। यह मेरे लिए आश्चर्य की बात है। कभी-कभी मै महसूस करता हूँ कि कुछ वर्ग के लोगों के लिए मेरे पास संदेश नहीं है। कुछ लोग सांसारिक बातों से इतने भरे हैं, शरीर की लालसाओं से भरे हैं और उनमें परमेश्वर के विषय मे एक विचार भी नहीं है। मैं कहता हूँ, 'ऐसा लगता है कि इन लोगों के लिए मेरे पास उपयुक्त संदेश नहीं है।' इसका अर्थ है वास्तव मे मेरी आत्मा बलवान नहीं है। आत्मा मे बलवन्त होने का मौका मुझे इस सहाभागिता मे मिला था। मेरे चारों ओर विश्वासी आदमी और औरतें थी और बार-बार परमेश्वर का वचन मुझे दिया गया था। मेरे पास बहुतायत से

पृष्ठ २ पर..क्रमशः...

सभी लोगों के लिए वचन होना चाहिए था। युहन्ना बपतिस्मा देने वाले के पास यहाँ तक कि राजा हेरोदेस के लिए भी संदेश था। उसने परिणामों की परवाह नहीं की। यह आत्मा में बलवन्त लोगों की निशानी है। यदि हम आत्मा मे बलवन्त हैं तो हम धार्मिकता को अपनाने के कारण निकलने वाले परिणामों की परवाह नही करेंगें। जब परमेश्वर हमें सांसारिक वस्तुओं में आशिष देते हैं, हम यह-वह खरीदने की चाह करते हैं और कुछ सुविधाएँ पाने की चाह करते हैं। इस प्रकार इकठ्ठा की हुई हर एक वस्तु तुम्हारी आत्मा को कमजोर करेगी। मुझे नहीं पता कितने लोग प्रभु को यह कहेंगे, 'प्रभु, टेलीविज़न के कारण मैंने प्रार्थना के समय को खो दिया और इस कारण मेरी आत्मा कमजोर हो गई।' हर तरफ लोग इन चीज़ों को इकठ्ठा करने के कारण कमज़ोर हो गए हैं। जहाँ तक मेरा संबंध है, मैं सब कुछ खोने को तैयार हूँ। यह मुझे बिलकुल परेशान नहीं करेगा। चारों ओर लोग आत्मा में कमजोर हो रहे हैं। उनके घर नई-नई चीजों से भरे हैं। लेकिन आत्मा कमजोर है। युहन्ना बपतिस्मा देने वाले के पास इन वस्तुओं मे से क्या था? कुछ नहीं उसके पास परमेश्वर का वचन था। कभी-कभी मैं लोगों को पिछड़ते देख कर दुखी होता हूँ। इस समय तक हमारे बीच मे ऐसे लोग पैदा हो जाने चाहिए थे जो स्वर्ग की गलियों मे चले हों और सुन्दर सिंह के समान वापस शरीर मैं चले हों, लोग जो परमेश्वर की गहरी बातों को जानते।' किसी प्रकार जब जिम्मेवारियाँ बढ़ने लगती हैं तो हमारी आत्मिक शक्ति कमजोर होती जाती है। जब जिम्मेवारियाँ बढ़े तो हमारा प्रार्थना का जीवन और हमारी आत्मिक शक्ति बढ़नी चाहिए। लेकिन गैर आत्मिक और शारिरिक सामर्थ पर भरोसा रखने वाले लोगों की मसीहत केवल उनका अपना प्रयास है। -

यही वह लोग हैं, जिनकी जिम्मेवारियाँ बढ़ने पर वे अपने विश्वास तथा आत्मिक शक्ति को कम होते देखते हैं। शारीरिक सामर्थ द्वारा हम आत्मिक कार्य नहीं कर सकते। उनकी आत्मा मज़बूत हो जाती है। परन्तु यह ज़रूरी नहीं कि वे परमेश्वर की आत्मा द्वारा प्रेरित हैं। वे अच्छे उपदेश दे सकते हैं या संदेशों का आनंद उठा सकते हैं लेकिन उनकी आत्मा पवित्र आत्मा द्वारा सामर्थ नहीं पाई है। ऐसा बनने का क्या लाभ? युहन्ना बपतिस्मा देने वाला बढ़ा और आत्मा मे बलवान होता गया। यही बात हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में लूका २:४० कही गई हैं। 'और बालक बढ़ता, और बलवंत्त होता, और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया; और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था।' जब बालक विकसित हो रहा हो, हम आत्मा के बल के विषय में बात नहीं करते। वह अच्छा धावक है, अच्छा टेनिस खिलाड़ी है; अच्छा हाकी खिलाड़ी है और इत्यादि। लेकिन जब बच्चे का विकास हो रहा हो तो कौन उसकी आत्मा के विकास के विषय में बात करता है? जब कभी हम कालिसिया में संख्या बढ़ते देखते हैं, हम सोचते हैं, 'अरे, यहाँ पांच सौ लोग हैं! ' अरे, यहाँ दस हज़ार लोग हैं! और, वह विकसित हो रही है।' नहीं ! हो सकता है वह मर रही हो ! दस हज़ार मरे लोगों का क्या लाभ? आत्मा में कितने लोग बलवान हैं? यही मान्य होगा। आजकल चारों ओर लोग ज़मीन चाहते हैं। मैं जमीन के टुकड़ों से घृणा करता हूँ। मिशन संस्थाओं का इतिहास दिखाता हैं, जहाँ बड़ी इमारतें या जमीन के प्लाट थे, वहाँ जल्द ही मसीही सेवा क्षीण हो गई। इसलिए इमारतों और प्लाटों की संख्या या सामर्थ आत्मिक सामर्थ की सूचक नहीं है। हम परमेश्वर से कैसे बात वार्तालाप करते है? हम परमेश्वर के कितने निकट चल रहे हैं? जब हम परीक्षा का सामना करते हैं तो हमारी आत्मिक सामर्थ कितनी है? हम कितने ऐसे शब्द बोल सकते हैं जो दूसरों का उत्साह बढ़ाएँ और आशिष बनें? यही आत्मिक सामर्थ के चिन्ह हैं।

आज, हजारों लोग परमेश्वर के वचन को सुन रहे हैं। जब तक हम इन लोगों के लिए प्रबल प्रार्थना न करें हम इसका फल नहीं देखेंगें, और परमेश्वर के लिए कुछ नहीं कर पाएँगे। हमारी प्रार्थनाएँ राष्ट्रों पर असर लाएँगी यदि हम अपना आदर न खोजें और संजीवन के लिए गहराई से पुकारें। क्या हम आत्मा मे बलवन्त हैं? ऐसा हो, परमेश्वर हमारी सहायता करें और इस नए साल में पग-पग पर हमारा मार्ग दर्शन करें !

- जोशुआ दानिएल।

उकाब के पंख

यशायाह ४० वे अध्याय में हमें बताया गया है कि, जब हम प्रभु की बाट जोहेंगे हम उकाबों के समान पंख फैलाकर ऊँचाई पर उठेंगें। उकाब पैनी नज़र वाले शानदार पक्षी हैं। वैज्ञानिक यह विश्वास करते हैं कि उकाबों की नज़र आदमी की नज़र से लगभग आठ गुणा तेज़ है। उनके पैर बहुत मज़बूत होते है और उनकी पकड़ लोहे की सी पकड़ है। उनकी चोंच कसाई के समान तेज है, जो कि काटने और अपना भोजन फाड़ने के लिए बनाई गई है।

लेकिन सबसे बढ़कर, उकाब उड़ने के लिए बने हैं। वे बड़े तीव्र वेग से उड़ते हैं - साठ, अस्सी या सौ मील प्रति घण्टा के वेग से। उनके पंखों का फैलाव लगभग आठ फुट होता है।

लेकिन उकाब चिड़ियों की भाँति नही उड़ते। अधिकतर पक्षी हवा मे पंख फड़फड़ा कर उड़ते हैं, लेकिन उकाब बहुत देर तक अपने पंख नहीं फड़फड़ा सकते। उनके पंखों की बनावट उँचां उठने के बनी है; और इस कारण वे लम्बी दूर बहुत कम शक्ति लगाए तय कर सकते हैं ।

परमेश्वर मे हमारी धरती (ग्रह) पर गर्म हवा के गुप्त खम्भों की रचना की है, गर्म हवा धरती से ऊपर उठती है। उकाब इन खम्भों को ढूंढते हैं, और इन अनदेखे गर्म हवा के साथ ऊपर उठते जाते हैं; अपने पंखों को फैलाए - आकाश में ऐसे उँचे उठते जाते हैं मानो मशीन उन्हें ऊपर उठा रही हो।

वे लगभग चौदह हज़ार फुट की ऊँचाई तक उड़ते हैं, आकाश में इतने ऊँचे कि धरती से

पृष्ठ ५ पर...उकाब के पंख

Beautiful Books

First Floor, Victoria Hotel
Near GPO
CST, Mumbai
Phone : (022) 5633 4763
9:30 AM - 7:00 PM

विश्वास की मात्रा

'वर्ष में तीन बार तेरे सब पुरुष इस्राएल के परमेश्वर प्रभु यहोवा को अपने मुंह दिखाएं।' निर्गमन (३४:२३)

परमेश्वर मनुष्य का मनोविज्ञान जानते हुऐ अपने लोगों को निर्देश देते हैं ताकि उनमे कृतज्ञता बढ़े। हममें से बहुत, अपने में आभार की कमी के कारण तकलीफ झेलते हैं। तुम्हारे अंदर विश्वास की मात्रा, आभार के मात्रा जितनी है। परमेश्वर चाहते हैं कि तुम अपने उद्धार का दिन याद रखो, कि कैसे वह आशिष तुम पर आई; कैसे उसने तुम्हें पाप से छुड़ाया और संसार का साथ और तुम्हें यह समझ दी कि जो उसने अब दिया है वह सबसे मूल्यवान है। तुम कुछ खो रहे हो यदि तुम इस बात को नहीं पहचान रहे और परमेश्वर का धन्यवाद नहीं कर रहे हो। कई संत आधी रात मैं जाग कर परमेश्वर का धन्यवाद करते थे। तुम्हें परमेश्वर का धन्यवाद करने के लिए कुछ समय ज़रुर निकालना चाहिए।

यहूदियों को साल मैं तीन बार यरुशलेम जाकर मंदिर मे उपस्थित होने कि आज्ञा मिली थी। वह लम्बी दूरी थी और यातायात की सुविधा भी नहीं थी। फिर भी उन्हें जाना पड़ता था। आप क्या सोचते हो, यात्रा के समय वह क्या करते होंगें? वे यह सोचते होंगे कि किसी प्रकार परमेश्वर ने उनके देश तथा व्यक्तिगत जीवन पर आशिष के कार्य किये हैं। लेकिन उन्होंने मसीह को नहीं पहचाना और परमेश्वर ने उसमें उनके लिए क्या किया है। उनकी यात्राएँ मसीह के आने की आशा को ताज़ा कर देती थीं। कभी-कभार वह सपरिवार आते और मंदिर मे भेंट चढ़ाते थे। परमेश्वर चाहते थे कि परिवार का पहिलौठा बालक उनको समर्पित किया जाए। इन सबके पीछे एक उद्देश्य था और जिन्होंने इसकी उपेक्षा की वे तकलीफों मे पड़े।

आज भी परमेश्वर के यह निर्देश हमारे लिए हैं। परमेश्वर का अनुसरण करने की बड़ी जिम्मेवारी हमारे ऊपर है। मैं हमेशा परमेश्वर से यह पूछता हूँ कि क्या में उनकी निगाह में सही हूँ। कितनी बार हम ऐसी आकांक्षाओं और विचारों में पड़ जाते हैं जो उनके विरुद्ध हैं ! मसीही विकास की प्रक्रिया यह है कि तुम्हारे विचार परमेश्वर के विचारों के स्तर तक पहुँचे। धीरे-धीरे तुम्हारे अपने विचार तुम्हे छोड़ देते हैं तथा परमेश्वर के विचार तुम्हारे अंदर स्थापित हो जाते हैं। इस विधर्मी समाज में मसीही होकर जीना एक बड़ी जिम्मेवारी है। हमें अपनी-अपनी अयोग्यता की समझ होनी चाहिए और परमेश्वर से यह माँगे कि वह हमें योग्य बनाए। क्या तुमने कालेज़ में यह दर्शाया कि तुम मसीही हो? जब तुम्हारे विचार मसीह के नियंत्रण में कर दिये जाएँ तो यह बड़ी विजय है। आपकी आत्मा परमेश्वर पर भरोसा करना आरंभ कर देती है। आरंभ मे व्यक्ति आवाजों, चमत्कारों और दर्शनों के द्वारा परमेश्वर में विश्वास करता है, लेकिन हमें परमेश्वर पर विश्वास के ऐसे स्तर तक पहुँचना चाहिए जो 'सीधा' परमेश्वर पर विश्वास है। मैडम गय्यून कहा करती थीं, 'दर्शन आत्मा के लिए, निचले स्तर की भेंट हैं और जो उन पर भरोसा करता है वह अंत में सिद्ध नहीं बन सकता।' परमेश्वर का वचन हमारे अंदर ऐसा काम करे और हमारे अंदर ऐसा विश्वास पैदा करे कि हर हाल में हम परमेश्वर के साथ चिपके रहें और उन्हें न छोड़ें। जब तुम परमेश्वर के वचन का आदर कर उसे अपनाते हो तो शैतान काँपना आरंभ कर देता है। अंधकार की शक्तियाँ काँपने लगेगी और तुमसे सावधान रहेंगी। तुम तब तक आगे बढ़ते रहो जब तक तुम्हारा जीवन विजय से न भर जाए। न केवल दस बल्कि हज़ार लोग मसीह के लिए जीते जाएँ।

परमेश्वर ने इस्राएलियों को साल मे तीन बार बुलाया। यह खर्चीला काम था और समय भी लगता था। परमेश्वर ने कहा, 'ज्येष्ठ बालक मेरा है।' यह सब परमेश्वर में हमारे भरोसे को बढ़ाता है। तुम्हारी आत्मिक योग्यता बहुत विकसित हो सकती है। तुम्हारे विचार नबूवतें कर सकते है, तुम्हारे शब्द नबूवत बन सकते हैं। जो लोग तुम्हारे संपर्क में आएँ वे यह अनुभव करें कि तुम्हारे अन्दर आत्मिक शक्ति है। नबी वैसे ही थे। हम शनिवार को प्रार्थना के लिए क्यों एकत्रित होते हैं? ताकि तुम्हारा विश्वास बढ़े। समय बीतते तुम जरुर दूसरों से भिन्न हो जाओगे। जीवन भर तुम्हारा मुख्य उद्देश्य मसीह की महिमा करना तथा उन तक लोगों को लाना रहेगा। तुम विश्वास के ऐसे स्तर तक पहुँचोगे जहाँ से तुम नहीं गिरोगे। हमारा विश्वास सही माध्यमों से बहेगा और गहरा-चौड़ा बढ़ता जाऐगा तथा सारे समाज तक पहुँचेगा। जॉन वैस्ली के समूह में वे प्रार्थना करते, सावधान रहते तथा आज्ञापालन करते। जब वे स्थान-स्थान की यात्रा करते, वे हर स्थान को आत्मिक शक्ति के प्रभाव से भर देते। एक दिन, परमेश्वर हमारा ऐसे ही उपयोग करेंगे। परमेश्वर के मंदिर को उनके नाम के योग्य रखना आसान कार्य नहीं है। यह उद्दारकर्ता का है। 'कोई जमीन नहीं चाहेगा' (२४ वचन) यह महान प्रतिज्ञा है। जितना जल्द तुम परमेश्वर की इच्छा अपनाते हो और अपनी इच्छा को छोड़ते हो, उतनी ही जल्द तुम आशिष की भरपूरी को देखोगे। परमेश्वर व तुम आनंदित होओगे। तुममें उद्धार का आनंद पूर्ण हो जाएगा। पतवार तुम्हें आगे नही बढ़ाएगी बल्कि सारी धारा ही तुम्हे साथ लेकर आगे बढ़ेगी। जब तुम जहाज़ के नियंत्रण वाले यंत्र को देखोगे तो तुम पाओगे कि तुम महान विजय की ओर बढ़ रहे हो। आज, लाभ-प्रेरित धर्म का प्रचलन है। इस कारण विधर्मी हमारे धर्म का आदर नहीं करते। प्रभु तुम्हारे साथ है। परमेश्वर कहते हैं, मैंने तुम्हे अपनी आज्ञाएँ दी हैं। अपने बच्चों को विधर्मियों के साथ वाचा मत बांधने दो। दूसरों से प्रतिज्ञा मत करो, जब तक परमेश्वर उसके लिए हामी न कर दे। यदि तुमने प्रतिज्ञा की हैं तो उसे तोड़ दो और परमेश्वर के आगे अपनी गलत प्रतिज्ञा की माफी माँगों। स्वार्थ को नही, बल्कि मसीह को मेरे ऊपर पूरा अधिकार है।

मूसा परमेश्वर की संगति मे गया और तेजस्वी चेहरे के साथ वापस आया। वह तुम्हारे समान मनुष्य था लेकिन देखो कितना अंतर ! किसने उसे यह आदर दिया? परमेश्वर ने ! हमारा चालचलन, दृष्टि और जीवनशैली एक गवाही होनी चाहिए। यह मसीही को मिला विशेषाधिकार है। ओह, बरबाद किये वर्ष ! नौजवान, तुझे, अब यह अवसर दिया जा रहा है। अनुग्रह में बढ़। प्रभु में आनंदित हो। परमेश्वर कहते हैं. 'तुम मेरे लोग हो और मैंने स्वर्गीय सत्य, सनातन सत्य तुम्हे प्रकट किया है।' याद रखो जब तुम बाइबल पढ़ते हो, तुम सनातन सत्य को प्राप्त करते हो। जैसे ही तुम सत्य के बहाव में आते हो तब कोई तुम्हें नही हिला सकता। परमेश्वर तुम्हें अपने प्रेम और अनुग्रह की गहराईयों तक लेकर जाएँगे, जो लोगों ने अभी तक नहीं देखी हैं।

-एन दानियल।

सत्य की परख!

मत्ती (५:१८)''क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जब तक आकाश और पृथ्वी न टल जाएं, व्यवस्था सें से एक मात्रा या बिन्दु भी, जब तक कि सब कुछ पूरा न हो जाए नहीं टलेगाा।''

पृष्ठ ३

नए जीवन की कुंजी

एक नन्हा शिशु पैदा हुआ है। एक नया जीवन आया है। तुम उसे नहलाते हो, कपड़ा पहनाते हो। भोजन देते हो और कपड़ो में गर्म रखते हो। दिन-प्रतिदिन उसकी ज़रुरतों को पूरा करते हो। तुम जानते हो वह स्वय अपनी देखभाल नहीं कर सकता।

तुम परमेश्वर के राज्य में पैदा हुए हो। तुमने अपना मन खोला और यीशु मसीह को आमंत्रित किया। तुमने उसे अपना उद्दारकर्ता माना और अब तुम उसके हो। और जब वह आये, उन्होंने तुम्हे अनंत जीवन दिया। अब तुम में वह जीवन है जो पहले तुम्हारे अंदर नही था। 'मै उन्हे अनंत जीवन देता हूँ।'

अच्छा, तुम अब इस नए जीवन की देखभाल कैसे करोगे? तुम मसीह में नन्हें शिशु हो। नए जीवन की क्या आवश्यकताएँ है? नए आत्मिक जीवन की वही आवश्यकताएँ हैं जो नन्हें शिशु की हैं।

१. भोजन।

शिशु को भोजन मिलना चाहिए, प्रतिदिन। इसी प्रकार तुम को भी। जो नया आत्मिक जीवन प्रभु ने तुम्हें दिया है उसे भोजन की जरुरत है। शिशु का भोजन 'दूध' है। आत्मिक शिशु का भोजन - परमेश्वर का वचन है - 'नवजात शिशु की भाँति, सच्चे वचन की आस करो, ताकि उसके द्वारा तुम बढ़ो।'

मेरा हृदय परिवर्तन १९०६ मे हुआ था। उस दिन से प्रतिदिन मैंने प्रभु के वचन बाइबल को पढ़ा, अपने जीवन के सारे साल, हर साल के ३६५ दिन। मुझे याद नहीं कि परमेश्वर की महान पुस्तक बाईबल की मैंने कभी उपेक्षा की हो। इन सारे साल बाइबल मेरे लिए खाने और पीने का भोजन रही है। और जितना अधिक मैं इसका अध्ययन करता हूँ यह मेरे लिए उतनी अधिक मूल्यवान बन रही है। इसके समान कोई दूसरी पुस्तक नहीं है। जब शैतान के आक्रमण प्रचंड हो जाते हैं, परमेश्वर का वचन मेरा सहारा और शरणस्थान रहा हैं। समय-समय पर यह मेरे लिए परमेश्वर का वचन सिद्ध हुआ है। ऐसी परीक्षाएँ जो मेरी सेवा का अंत बन जाती, परमेश्वर के वचन मे उपलब्ध प्रतिज्ञाओं के कारण, नाकाम हुई, जब दुख ने मेरे मन को घेर लिया और दुर्घटनाओं ने मुझे निगल लिया, परमेश्वर ने अपने वचन द्वारा मुझसे बात की। कड़वी निराशाओं के बीच, मैंने उसकी आवाज़ को सुना हैः 'रोना तो केवल रात भर रहेगा, परन्तु आनंद का सवेरा आने वाला है।' जब मेरा मन भयभीत था, मैंने उसे यह कहते सुना, 'हे मेरे प्राण, तू क्यों उदास है ? और मेरे मन तू क्यों अशांत है? परमेश्वर में भरोसा करः क्योकि मैं अब भी उसकी स्तुति करुंगा। और मैंने उसे सच्चा पाया।

२. संगति

शिशु को संगति चाहिए। वह अपने को व्यक्त कर सके तथा अपनी ज़रूरत बता सके। जब वह भूखा हो या दर्द में हो वह रोता है। और माँ तुरन्त जवाब देती है। तुम्हें भी आत्मिक संगति की आवश्यकता है। यदि तुम सही रीति से पैदा हुए हो तो जरूर तुम्हारे मन में यह पुकार रहेगी। हम इस पुकार को प्रार्थना कहते हैं। मैं आप को ज़ोर देकर यह सलाह दूंगा कि आप प्रति दिन अकेले में परमेश्वर से प्रार्थना करें। उसे सब कुछ बताओ। कुछ मत छिपाओ। उनसे ऐसे बात करो जैसे एक मित्र से बात करते हो। जब आप बाईबल पढ़ते हो तो परमेश्वर आप से बात करते हैं, जब तुम प्रार्थना करते हो तो तुम परमेश्वर से बात करते हो। और इस प्रकार तुम संगति पाते हो। जिस प्रकार तुम्हारी जान पहचान अपने मित्र से हुई वैसे ही तुम्हारी जान-पहचान परमेश्वर से होगी। आप बोलते हो, वह बोलते हैं। जब आप बातचीत करते हो एक दूसरे को और अधिक जानोगे। इसलिए परमेश्वर से अधिक बातचीत करो, प्रार्थना करो।

३. व्यायाम/अभ्यास

नन्हें शिशु को कसरत की आवश्यकता है। वह कसरत करने के लिए अपने नन्हें हाथ-पैरों को चलाता है।

तुम्हें भी, यदि शक्तिशाली बनना चाहो, व्यायाम की आवश्यकता है। तुम्हे मसीह के लिए अपनी गवाही देनी चाहिए, इस प्रकार आप कसरत करते हो। दूसरों को अपने विश्वास के विषय में बताओं। व्यक्तिगत कार्य करो। खुले में मसीह को अपनाओ। गवाही दो, यदि ऐसा नहीं करोगे, तो पीछे फिसल जाओगे। यदि दोगे तो सामर्थी बनते जाओगे मसीह के लिए काम करने मे व्यस्त हो जाओ। यदि तुम्हे इस बात की समझ है कि उन्होंने तुम्हारे लिए क्या किया है तो उनकी सेवा करने से तुम नहीं झिझकोगे। तुम्हे कम से कम अपने उद्धारकर्ता और परमेश्वर पर इतना गर्व होना चाहिए जितना तुम्हें अपने देश या राजा पर है। तुम रणभूमि में अपने रंग दिखाने से नहीं घबराओगे। सत्य तो यह है कि तुम अपने देश का झण्डा फहराकर उसके आगे बढ़ोगे। तब राजा यीशु के झण्डे को उठाने से तुम क्यों झिझकते हो? इसके द्वारा तुम संसार के सामने यह साबित करते हो कि तुम किस पक्ष में हो। क्या तुम यह चाहते हो कि उस महान दिन वह तुमसे शर्माए, अपने पिता और स्वर्गदूतों के सामने? तब तुम्हें उसके नाम को लेने से नहीं शर्माना चाहिए। परमेश्वर कहते हैं, 'उद्धार के लिए मुँह से अंगीकार किया जाता हैं।'

कोई दूसरी चीज़ किसी विश्वास को उतनी सामर्थ नही दे सकती जितनी सबके सामने गवाही। यदि तुम आत्मिक रूप से बढ़ना चाहते हो तो सबके सामने मसीह को स्वीकारो। शैतान चुप रहने वाले मसीहीयों की परवाह नहीं करता लेकिन उनका डटकर विरोध करता है जो खुले में मसीह के साथ अपने संबंध की घोषणा करते हैं। लेकिन गवाही ही शैतान के आक्रमणों को निरस्त कर देती है।

जिससे तुम प्रेम करते हो तुम उसके बारे में बात करना चाहोगे। कम से कम, अधिकतर लोग ऐसा कर सकते हैं। और यदि तुम सचमुच में प्रभु यीशु मसीह से प्रेम करते हो तो तुम उनके बारे में बताना चाहोगे।

मेरे मित्र, मसीही गवाही, इस संसार की संगति की विषनाशक औषधि है। तुम्हें अपने संसारी मित्र कभी नहीं त्यागने पड़ेंगे, कभी नहीं। केवल उन्हें यीशु के बारे में बताओ। जब तुम उनके साथ प्रार्थना करने लगो उन्हें घुटने टेकने को कहो। उन्हें सुसमाचार पत्री दो। और संजीवन सभाओं मे उन्हे आमंत्रित करो। कोशिश करो। तुम जानते हो क्या होगा? वे तुम्हें जलते कोयले की भाँति छोड़ देंगें। वे तुम्हारा साथ नहीं चाहेंगे। और तब तुम नए मित्र पाओगे और नए साथी, मसीही, जो उन्हीं चीज़ों से प्रेम करते हैं जिनसे तुम करते हो और वही चाहेंगें जो तुम चाहते हो। उनके साथ तुम्हारी मित्रता अनंत होगी। यहाँ तक कि मृत्यु भी इस मित्रता को नहीं अलग कर सकती।

इसलिए आओ परमेश्वर के प्रति वफादार बनें। आओ मसीह के लिए गवाही दें। लोगों के सामने खुले में उन्हे स्वीकारें, तब आनंद तथा, प्रभु द्वारा अनुमोदन हमारा पुरुस्कार ठहरेगा ।

-- चुना हुआ

डाकू और बाईबल

फेरीवाला मार्ग के किनारे थका-मांदा चला जा रहा था। सूर्यास्त का समय था। सिसिली के नगर में उसने दिन भर अपने सामान की फेरी लगाई थी, वह नगर लगभग दस मील पीछे रह गया था और इसे रात के विश्राम स्थल तक पहुँचने के लिए अभी और लम्बी दूरी तय करनी थी।

घोड़े की टाप की आवाज़ उसके निकट पहुँची। मुड़ते हुए उसने सवार को देखा, एक डरावना काली दाड़ी वाला आदमी जो चोड़ी टोपी और काला चोगा पहने था। जैसे ही सवार ने घोड़े को रोकने के लिए लगाम खींची, फेरीवाले ने इतालवी भाषा मे कहा, 'नमस्कार, श्रीमान।' यह समझते हुए कि ऐसे डरावने व्यक्ति से बात करने का केवल यही तरीका है।

घुड़सवार घोड़े से कूंद कर ज़मीन पर उतरा।

'तुम्हारे थैले में क्या है?'

'किताबें, श्रीमान।'

'आखिरकार मैंने तुम्हे ढूंढ ही लिया ! तू इन किताबों को भोले-भाले लोगों को बुराई की ओर फिराने के लिए बेचता फिरता है। मैं पहले तेरी यह किताबें आग मे जलाऊँगा और बाद में तुझे गोली मार दूँगा। अपनी थैली नीचे पटक और चल, आग के लिए लकड़ी इकठ्ठी कर।' उसने फेरी वाले को झकोरा। फेरीवाले को लगा कि यह कोई अपराधी है, वह वैसा ही करने लगा जैसा उसने बोला गया था। जब तक आग सुलगाई, रात हो चुकी थी।

'श्रीमान, इससे पहले कि आप मेरी किताबें जलाएँ और मुझे गोली मारें कृपया इनमें से एक पुस्तक आपको पढ़कर सुनाने की अनुमति दीजिए।'

'ठीक है।' आग के पास बैठते हुए लुटेरे ने कहा। फेरीवाले ने लूका रचित सुसमाचार के एक भाग को चुना, 'एक आदमी यरूशलेम से यरीहो जाते हुए लुटेरों के हाथों मे पड़ा।' यह साहसी कदम था, लेकिन डाकू उस अच्छे सामरी की कहानी को सुनता रहा जो उसे पढ़कर सुनाई जा रही थी।'

'मुझे यह कहानी पसंद आई' डाकू ने कहा।' हम इस किताब को नहीं जलाएँगे।'

मत्ती रचित सुसमाचार को निकालते हुए उसने पहाड़ी पर प्रभु यीशु द्वारा दिये उपदेश को सुनाया।

'इस किताब मैं भी कोई बुराई नहीं हैं; हम इसे भी नही जलाएँगे !'

इस बार फेरीवाले ने 'नया नियम' की पुस्तक खोली और कुरंथियों की पुस्तक से मसीही प्रेम के विषय में लिखी पौलुस की पत्री सुनाई।

'अति सुंदर और सत्य ! हम यह पुस्तक भी संभाल कर रखेंगे। दूसरी पुस्तक पढ़ो।'

जैसे फेरीवाला एक एक कर पुस्तकें पढ़ता गया, वे न जलाने वाली पुस्तकों के ढेर मे इकठ्ठी होने लगीं।

'श्रीमान मेरे पास और किताबे नहीं हैं।'

'बेवकूफ, बुरी किताबे कहाँ हैं?'

'श्रीमान, मेरे पास एक भी नहीं है।'

भौंचक्का डाकू घोड़े को ऐड़ लगाकर चला गया।

अगले गांव की सराय की और आगे बढ़ते हुए, फेरीवाले ने एक बार फिर परमेश्वर को जान बचाने के लिए धन्यवाद दिया !

अगली सुबह बाज़ार में फेरी वाला गधे के चारों ओर खड़े लोगों से आकर बोला। 'क्या मै प्रभु यीशु मसीह के विषय मे पढ़कर सुनाऊँ?'

'खुशी से' उनका जवाब आया।

तब फेरीवाले ने उन्हे सुनाया कि कैसे यीशु ने अपने दो चेलों को गधा लाने के लिए भेजा।

' यह पुस्तक कितने की है?' उनमें से एक चिल्लाया।

' आधा-पैसा।' फेरीवाले ने कहा।

' सावधान ! यह बुरी किताबें हैं -------' एक ऊँची आवाज ने चारों ओर हड़बड़ी मचा दी और जल्द ही मौहल्ला, भीड़ से भर गया।

' धर्मभ्रष्ट को पत्थर मारो !'

' झूठे को मृत्युदण्ड !'

जब स्थिति बिगड़ रही थी, एक घुड़सवार तेजी से चौक के बीचों बीच आया, एक डरावना व्यक्ति काली दाड़ी वाला।

'इस आदमी को अकेला छोड़ दो' वह चिल्लाया। सभी डाकू को जानते थे और उससे डरते थे।

'लेकिन श्रीमान; एक ने पुकारा', यह बुरी किताबें बेचता है। वह दण्ड के योग्य है।'

डाकू ने घोड़े पर बैठे पिछली रात की सारी घटना उनको सुनाई।

'यह किताबें अच्छी है।', उसने बात पूरी करते कहा।

सालों बीत गए और एक दिन मसीही किताबों की फेरी करने वाले वे पास अमरीका से पत्र आया। आश्चर्य करते हुए उसने खोलकर उसे पढ़ा। पढ़ते हुए उसका आश्चर्य और अधिक बढ़ गया। वह लुटेरे ने लिखा था ! काफी समय पहले उस रात के बाद उसका जीवन कैसे बदल गया था, जब उस मसीही पुस्तकों की फेरी वाले ने आग के पास बैठे उसे परमेश्वर का वचन सुनाया। गलती से कही 'बुरी किताबें' उसके लिए उद्धार लेकर आईं।

--चुना हुआ

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दीजिए।

मृत्युंजय खिस्त

पृष्ठ २ से...उकाब के पंख

नंगी आंखों द्वारा देखे भी नहीं जा सकते। जब वे उस ऊँचाई तक उठ जाते हैं तो इस गर्म हवा के खम्मों से बाहर निकल आते हैं। अपने पंख फैलाए वे इधर-उधर, नीचे-ऊपर मीलों उड़ते रहते है, वह भी ज़रा सी मेहनत द्वारा।

यशायाह मानो यह कह रहा हो - कि परमेश्वर अदृश्य है, लेकिन जैसे गर्म हवा की अदृश्य ऊँची उठती धाराएँ है, वैसे ही परमेश्वर भी अपने लोगों के लिए उपलब्ध हैं। जब विश्वास के पंख फैलाए हम उन्हे खोजते हैं, उनकी दी प्रतिज्ञाओं का दावा करते हैं और उन पर भरोसा करते हैं। हम ऊँचे उठा लिए जाते हैं। हम उकाबों की भाँति पंख फैलाए उड़ते हैं। हम दौड़ते हैं परन्तु थकते नहीं। हम चलेंगें पर श्रमित न होंगें।

वह शक्ति जो हमें पवित्र, प्रभावी, विजयी मसीही जीवन जीने के लिए चाहिए, आंतकित चिड़िया जैसे हड़बड़ी में बार-बार पंख फैलाकर फड़फड़ाने से नहीं मिलती परन्तु परमेश्वर मे विश्वास करने द्वारा तथा यीशु मसीह में विश्राम द्वारा।

- चुना हुया

लुका (१:६८,७४)

''...इस्राएल का प्रभु परमेश्वर धन्य हो, क्योंकि उसने हमारी सुधि ली है और अपने लोगों के छुटकारे का कार्य पूरा किया है।...कि हमें यह वर दे कि हम अपने शत्रुओं के होयों से छुड़ाए जाकर निर्भयता से अपने जीवन भर पवित्रता और धार्मिकता सहित उसकी सेवा करें।''